उच्च स्तर के विद्यार्थियों में ई- लर्निंग के द्वारा विषय के प्रति रूचि से शिक्षा मे आया बदलाव (कोरोना काल के संदर्भ में)

पूजा कुमार
मायादेवी शिक्षा महाविद्यालय, देवास(म.प्र.)

पृथ्वी पर जीवन और उसके अस्तित्व का संतुलन बनाने के लिए दुनिया भर के लोगों के लिए शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण उपकरण है जो सभी को आगे बढ़ने और जीवन में सफल होने के लिए प्रेरित करती है। शिक्षा हमें हमारे शरीर, मन और आत्मा का ठीक संतुलन बनाने में सक्षम बनाती है। यह हमारे पूरे जीवन को प्रशिक्षित करती है और हमें वो दृष्टि देती है, जिससे बड़े से बड़ा लक्ष्य हम खुद चुनते है और अपनी शिक्षा का उपयोग कर ही हम उस लक्ष्य को पाते है। शिक्षा का महत्व तो सिर्फ वही बता सकता है जिसने अशिक्षित होने का नुकसान उठाया है। शिक्षा न केवल एक व्यक्ति के लिए बल्कि एक परिवार, समुदाय तथा एक राष्ट्रन् के लिए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि "किसी भी राष्ट्रन् के विकास की गति उसके नागरिकों के बीच शिक्षा के प्रसार से ही होती है। प्राचीनकाल में भारत के नालंदा और तक्षशिला आदि विश्वविधालय संपूर्ण संसार में शिक्षा के उच्च केन्द्र थे। प्राचीनकाल में पहले मौखिक एवं कंठस्थ रूप में शिक्षा प्रचलित थी । समय के साथ शिक्षा का स्वरूप और इसके तौर तरीकों में बदलाव आया। इसके बाद में धीरे-धीरे शिक्षा उपकरणों के रूप में लिखित शब्दों का उपयोग होने लगा। यह दूसरी क्रान्ति थी। जिसके फलस्वरूप स्कूलों में मौखिक शिक्षा के साथ लिखित शिक्षा ने भी स्थान ले लिया। इसके फलस्वरूप शिक्षा को अध्ययन हेतु घरो की दीवारों पेड़ो के पत्तों गुफाओं की दीवारों पर संकेतो के द्वारा लिखित रूप में दर्शाया जाने लगा था। तीसरी क्रान्ति मुद्रण के अविष्कार के साथ आयी तथा पुस्तकें उपलब्ध होने लगी। इलेक्ट्रॉनिक्स तकनीकी क्षेत्र में आये विकासशील परिवर्तन चौथी क्रान्ति के सूचक थे। इसके बाद रेडियो तथा टेलीविजन आदि का प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में होने लगा। कम्प्यूटर, लैपटॉप, टेबलेट, मोबाइल, स्मार्ट फोन एवं सीडी-डीवीडी आदि के आने से संचार के क्षेत्र में विकास हुआ जिससे कि ईमेल ,डिजिटल, वीडियो ई-बुक्स ,ई-शिक्षा ऑनलाइन शिक्षा और इंटरनेट के माध्यम से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इन यंत्रों ने नई क्रान्ति का उदय किया। इन साधनों ने शिक्षा के क्षेत्र में पुरानी अवधारणाओं में आधुनिक सन्दर्भ के साथ अभूतपूर्व क्रान्तिकारी परिवर्तन करके उन्हें एक नया स्वरूप प्रदान किया है।

शिक्षा हमारे जीवन, अनुभवों, विचारों को सुसंस्कृत और परिमार्जित करती है। शिक्षा मानव के व्यक्तिगत जीवन का निर्माण तो करती है इसके साथ-साथ समाज का एक उत्तरदायी घटक व देश का प्रखर चरित्र सम्पन्न नागरिक बनाकर समाज की सर्वागीण उन्नति तथा संस्कृति एवं सभ्यता को पुनर्जीवित एवं पुनः स्थापित करने के योग्य बनाती है शिक्षा को राष्ट्रन् के उत्थान का मूल तत्व माना जाता है, क्योकि राष्ट्रन् के प्रत्येक कार्य के करने की रीढ़ शिक्षा ही होती है। शिक्षाविहिन व्यकित पशु के समान होता है शिक्षा ही वह माध्यम हे जिससे मनुष्य मनुष्यत्व को प्राप्त करता है। जिस प्रकार मिट्टी कुम्हार के हाथ में आकर वह एक सुन्दर कलश का आकार ले लेता है उसी प्रकार एक व्यक्ति का व्यक्तित्व भी शिक्षा पाकर निखर उठता है। इस प्रकार राष्ट्रन् के सर्वागीण विकास का उक मात्र विकल्प शिक्षा ही है। शिक्षा के द्धारा ही राष्ट्रन् को विकसित, विकासशील, क्रियाशील, सर्वसुविधा-सम्पन्न और समृद्धिशाली बनाया जा सकता है। आधुनिक युग में शिक्षा का महत्व उतना ही महत्वपूर्ण है जितना एक फलदार पेड़ बनाने के लिए मिटटी और पानी का महत्व होता है ं शिक्षा का प्रसार जन-जन तक करने के लिए और कोई भी व्यक्ति, बालक या बालिका निरक्षर न रहे ऐसी व्यवस्था की स्थापना करने के लिए भारत सरकार द्धारा शिक्षा का अधिकार को मौलिक अधिकार का दर्जा दे दिया गया। इसके पश्चात् पठन-पाठन का कार्य उत्तम गति से चल रहा था कि एक ऐसा दोर आया कि एक वायरस ने सम्पूर्ण शिक्षा जगत को हिलाकर रख दिया। कोरोना जैसी वैश्यिक महामारी ने स्कूलों में ताले लगवा दिये और किताबें बस्तों में दम तोडने लगी।

मानव इतिहास में पहली बार वैश्यिक स्तर पर बच्चों की एक पूरी पीढ़ी की शिक्षा बाधित हुई। कोरोना ने शिक्षा व्यवस्था का कायापलट करके रख दिया। संक्रमण से बचाव के लिए दुनिया के एक सौ नब्बे से अधिक देशों को अपने रूकूल बंदकरने पडे। यूनेस्कों के मुताबिक कोविड-19 की शुरूवात के बाद दुनिया के एक सौ अड़तीस देशों के करीब डेढ़ अरब छात्रों की शिक्षा स्कूलों के बन्द होने से बाधित हुई। इसी प्रकार संयुक्त राष्टन्र् शैक्षणिक सांस्कृतिक वैज्ञानिक संगठन (यूनेस्को) ने एक रिपोर्ट जारी की जिसके अनुसार कोरोना महामारी से भारत में लगभग 32 करोड़ छात्रों की शिक्षा प्रभावित हुई जिसमें लगभग 15.81 करोड़ लड़कियां और लगभग 16.25 करोड़ लड़के शामिल है। वैश्यिक स्तर पर इस महामारी से दुनिया के 193 देशों के 157करोड़ छात्रों की शिक्षा प्रभावित हुई। ऐसी स्थिति में बच्चों का सीखना लगातार बना रहे इसके लिए ई- लर्निग शिक्षा का प्रारम्भ एक विकल्प के रूप में किया गया। ई- लर्निग शिक्षण कोरोना संकट के निराशा भरे माहोल में एक आशा की किरण लेकर आया और बच्चे लेपटाप, सेलफोन, टेब आदि के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने लगे। ऑनलाइन शिक्षा को सरल भाषा में इंटरनेट आधारित शिक्षा व्यवस्था कहते है। इसमें इंनरनेट उपकरणों का उपयोग करके विद्यार्थी और शिक्षक संवाद स्थापित करते है इसके अन्तर्गत विद्यार्थी वीडियो के माध्यम से लाभान्वित होते है।

इस प्रकार छात्रों के भविष्य व शिक्षा के महत्व को देखते हुए "इलेक्ट्रॉनिक अधिगम" या "डिजिटल शिक्षा" शिक्षा का प्रारंभ किया गया जो शिक्षा में निरन्तरता बनाये रखने हेतु अच्छा विकल्प था, ऐसा नही है कि हम महामारी से पहले ई-लर्निंग शिक्षा से अवगत नही थे इससे पहले भी छात्र व शिक्षण संस्थान पठन-पाठन हेतु इस माध्यम का सहारा लेते थे परन्तु उस वक्त यह वैकल्पिक था कि छात्र व शिक्षण संस्थान किस माध्यम से पढना व पढ़ाना पसन्द करते है परन्तु कोरोना जैसी वैश्विक महामारी ने इस विकल्प को अनिवार्य व आवश्यक बना दिया और यह लॉकडाउन में शिक्षा जगत के लिए अंधेरे में रोशनी के रूप में सामने आया और शिक्षा जगत के लिए आगे का मार्ग प्रशस्त किया। उच्च शिक्षा में ई-लर्निंग की स्वीकृति कार्य-प्रौद्योगिकी की भूमिका सूचना प्रणाली सफलता मॉडल के अनुरूप कोविड-19 वैश्विक महामारी ने उच्च शिक्षा संस्थानों को अपनी शिक्षण विधियों पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर कर दिया है। इस सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल के कारण उच्च शिक्षा में विश्वविद्यालयों ने आमने-सामने की शिक्षा के समाधान के रूप में ई-लर्निंग तकनीकों को अपनाया है।

इस प्रकार उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षा में ई-लर्निंग एक महत्वपूर्ण तकनीक के रूप में उभरी है। हम छात्रों को शैक्षिक उद्देश्यों के लिए ई-लर्निंग सिस्टम का उपयोग करने की सलाह देते हैं और उन्हें उच्च-स्तरीय शैक्षणिक संस्थानों में व्याख्याताओं के माध्यम से ऐसा करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। हाल में हुए एक अध्ययन के अनुसार आज के विद्यार्थी, कालेज और विश्वविद्यालयों में शिक्षकों से केवल एक तिहाई शिक्षा अपने सहपाठी समूह से और बाकी स्व-अध्ययन के द्वारा सीखते हैं। सिर्फ विश्वविद्यालय ही सीखने के स्रोत नहीं रहे हैं न ही वे सभी को आजीवन शिक्षा के आधार पर उच्च शिक्षा, तकनीकी दक्षता और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने की जिम्मेदारी उठा सकते हैं। आज मल्टीमीडिया और इंटरनेट के प्रयोग ने एक नए युग की शुरुआत कर दी है, जिसने विद्यार्थियों और शिक्षकों में उम्मीदे जगा दी हैं।

नई तकनीक मशीने एवं इंटरनेट सीखने वालों को लचीलापन प्रदान करती हैं। चूँकि ये सीखने वालों की सभी इन्द्रियों को एक साथ परस्पर संबंधित करती हैं इसलिए सीखना दिलचस्प हो जाता है। इन मशीनी इकाइयों द्वारा शिक्षा को मनोरंजन के साथ मिश्रित करना भी आसान हो जाता है। इस प्रकार यह शिक्षा आधारित मनोरंजन बन जाता है। ये काफी प्रोत्साहन देने वाले होते हैं और सीखने वालों को शक्ति और सत्ता प्रदान करते है। इस प्रकार सूचना के इस युग में शिक्षा और सीख के लिए नई तकनीकों का अधिक दिलचस्प और कारगर ढ़ंग से प्रयोग करना संभव हो गया हैं।

इंटरनेट दैनिक जीवन में परिवर्तन का माध्यम बन गया है। रिचर हुकर ने चेतावनी दी थी कि परिवर्तन असुविधाजनक ही होता है। इंटरनेट एक सूचना का बहुत बड़ा भण्डार है जिसने संसार की जानकारियों को एक जगह उपलब्ध करा कर एक अदभुत कार्य किया है। यह सभी विषयों पर सूचना उपलब्ध कराता है और संसार भर में कहीं भी इसे उपयोग किया जा सकता है। इंटरनेट ने आज विद्यार्थियों को अपनी मर्जी अपने समय और अपने स्थान के अनुसार अपने अध्ययन को आगे बढ़ाने का विकल्प दिया है। विद्यार्थी पाठ्य-सामग्री तक पलक झपकते पहुँच जाते हैं। इसमें विद्यार्थियों की सीधी पहुँच होती हैं और वे अध्ययन तथा सीखने के बजाये खोज करने से सीखते हैं। इस प्रकार सीखने की प्रक्रिया अपेक्षाकृत अधिक विद्यार्थी केन्द्रित बन जाती है। ज्यादातर कार्यक्रम विद्यार्थियों को सूचना के नए क्षेत्रों की खोज के लिए इन्टरनेट पर कुशल बनाते हैं। खोज की यह प्रक्रिया विद्यार्थियों को खोज और नई-नई सूचनाओं को जानने के लिए प्रेरित करती है।

आज इंटरनेट का उपयोग जीवन के सभी क्षेत्रों में बढ़ता ही जा रहा है जिससे इंटरनेट का विस्तार पूरी दुनिया में तेजी से होता जा रहा है। सरकारी गैर-सरकारी स्वास्थ्य बैकिंग खेल समाचार के साथ प्राथमिक माध्यमिक व उच्च शिक्षा में इंटरनेट अपनी भूमिका को निभा रहा है। इंटरनेट के उपयोग ने विद्यार्थियों के सामने आज उच्च शिक्षा हेतु राह आसान की है। आज न केवल उच्च शिक्षा संस्थानो बल्कि माध्यमिक व प्राइमरी स्कूलों के विद्यार्थियों की भी इंटरनेट से पढ़ाई करने में विशेष रुचि है'। इंटरनेट के प्रसार के बाद भारत में सूचना और संचार के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन हुए है। भरत में इंटरनेट सेवाओं के उपभोक्ता अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए सभी प्रकार के सूचना स्रोतों तक पहुँच सकते हैं। विकासशील देशों में भारत की गणना उन देशों में होती है, जहाँ इंटरनेट उपभोक्ताओं की संख्या सबसे अधिक है। भारत में इंटरनेट के प्रसार की सहायता एवं समर्थन मिलने के दो प्रमुख कारण हैं इनमें प्रथम है जो अंग्रेजी जानते और समझते हैं तथा जो किसी अन्य भाषा की अपेक्षा अंग्रेजी में संचार को प्राथमिकता देते हैं। इसे शैक्षिक अनुसंधान नेटवर्क (एर्नेट) द्वारा केवल शैक्षिक उद्देश्यों के लिए उपलब्ध कराया जा रहा था। यह सेवा देश में इंटरनेट ढ़ाँचा कायम करने और भारतीय इंटरनेट सेवा को अंतरराष्ट्रीय पहुँच में लाने की दिशा में भारत और संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम का पहला संयुक्त प्रयास था।

नवें दशक के मध्य भारत में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में व्यापक क्रान्ति हुई है जिसने भारत को अंतरराष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अग्रणी पंक्ति में पहुँचा दिया हैं। देश में सूचना प्रौद्योगिकी की पहचान एक ऐसे एजेंट के रूप में हुई है जो मानव जीवन के सभी क्षेत्रों के सभी पहलुओं में परिवर्तन लाने वाला है और जिसने 21वीं शताब्दी में ज्ञान पर आधारित समाज का निर्माण किया।

आज पूरी दुनिया में इंटरनेट का उपयोग हो रहा हैं, भले ही कुछ देशों में यह प्रयोग कम है और कुछ में ज्यादा। भारत की 8 प्रतिशत से कम आबादी इंटरनेट का उपयोग करती हैं। अगर भाषा के आधार में देखा जाये तो इंटरनेट का उपयोग अंग्रेजी भाषा अपना प्रथम स्थान रखती हैं।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इंटरनेट का बहुतायत से उपयोग किया जा रहा है। इसकी सहायता से शैक्षिक स्तर पर उन्नति हुई है। आज दुनिया के किसी भी कोने में बैठा विद्यार्थी इसकी सहायता से उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकता है। ई-शिक्षा (ई-लर्निंग) को सभी प्रकार इलेक्ट्रॉनिक समर्थित शिक्षा और अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता हैजो विद्यार्थियों के व्यक्तिगत अनुभव अभ्यास और ज्ञान के संदर्भ में ज्ञान के निर्माण को प्रभावित करता है। ई-शिक्षा में वेब-अधारित शिक्षा कम्प्यूटर आधारित शिक्षा आभासी कक्षाएँ और डिजिटल सहयोग शामिल है। पाठ्य-सामग्रियों का वितरण इंटरनेट के माध्यम से किया जाता है। आज कल इंटरनेट का प्रयोग न केवल ई-शिक्षा में ही किया जा रहा हैं, बल्कि ऑनलाइन फॉर्म भरने नौकरी के लिए आवेदन करने और पुस्तके पढने में भी किया जा रहा हैं। आज विद्यार्थी शिक्षा के सभी क्षेत्रों में इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं।

उच्च शिक्षा में आधुनिक शिक्षण मशीनों का उपयोग

आज शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक शिक्षण मशीनों मोबाइल स्मार्ट फोन, लैपटॉप, टेबलेट, रेडियो, टेपरिकॉर्डर, टेलीविजन, प्रोजेक्टर, भाषा प्रायोगशाला आदि द्वारा शिक्षण आदि के प्रयोगों ने उच्च शिक्षा प्रक्रिया का मशीनीकरण कर दिया है। आज मशीनों के प्रयोग से शिक्षक अपने विद्यार्थियों कों आसानी से अपने ज्ञान कौशल से लाभान्वित करा सकता है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण मशीनों का उपयोग आज तेजी से बढ़ता जा रहा है।

ऑनलाइन पढ़ाई

यदि आप किसी व्यवसाय में रहते हुए अपनी शिक्षा जारी रखना चाहते है या आपके पास कक्षा में जाने का समय नहीं है, तो इसके लिए विद्यार्थी दूरस्थ शिक्षा के लिए सम्बन्धित संस्थान में विद्यार्थी ऑनलाइन घर या ऑफिस में बैठे-बैठे अपना अध्ययन जारी रख सकते है। ऑनलाइन परीक्षा भी दे सकते है। इससे उच्च शिक्षा की ओंर विद्यार्थियों का रुझान तेजी से बढ़ा रहा है।

ऑनलाइन पुस्तके पढना

विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा हेतु अनेक पुस्तकों की आवश्यता होती है जिन्हे खरीद पाना सबके लिए सम्भव नहीं है। इसके अलावा पुस्तकें महंगी और आसानी से उपलब्ध न होने के कारण विद्यार्थी ऑनलाइन पढना पसंद करते हैं। अतः ऑनलाइन पुस्तकों की उपलब्धता इन सभी विद्यार्थियों को लाभान्वित करती है। आजकल सभी प्रकार की पुस्तकों का विस्तारपूर्वक विवरण इंटरनेट पर उपलब्ध रहता है, जिससे विद्यार्थी अपनी पूरी पढ़ाई इन पुस्तकों का उपयोग करके कर लेते हैं।

उच्च शिक्षा में टेलीकांफ्रेसिंग

इसका चलन अमेरिका में टेलीविजन तथा टेलीफोन पिक्चर फोन के जरिए 1960 में आरंभ हुआ। कांफ्रेसिंग हेतु कम्प्यूटर व इंटरनेट द्वारा प्रदत्त बहु-माध्यमी सेवाओं का उपयोग किया जाता है। यहाँ हम इंटरनेट सेवाओं द्वारा लिखित सामग्री, रेखाचित्रों आदि को कॉफ्रेसिंग में भाग लेने वाले व्यक्तियों को प्रेषित कर सकते हैं। ऑडियो-वीडियो कॉफ्रेसिंग, जब कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी और इंटरनेट से अच्छी तरहा जुड़ जाती हैंतो ऐसी टेलीकांफ्रेसिंग शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को ही अपनी-अपनी स्वाभाविक रुचियों समय और साधनों की उपलब्धता तथा सीखने-सीखाने की गति के आधार पर स्व-अनुदेशक एवं स्व-प्रशिक्षण प्रदान करती है। इससे विद्यार्थी उच्च शिक्षा के विषय में आपस में संवाद कर सकते हैं। इसके साथ ही आपस में पाठ्य-सामग्री के विषय में संवाद कर सकते हैं।

एम-लर्निंग

आजकल मोबाइल लर्निंग (एम-लर्निंग) का भी चलन है। आज मोबाइल विद्यार्थियों के साथ 24 घंटे उपलब्ध रहता है जिससे वह इंटरनेट से हमेशा कनेक्ट रहते हैं। परिणामस्वरूप आज विद्यार्थी मोबाइल सर्विसेज की अति आधुनिक तकनीक का उपयोग ई-बैकिंगई-कामर्स तथा ई-लर्निंग में उसी तरह कर सकते हैं जैसे कि कंम्प्यूटरों द्वारा सुलभ इंटरनेट तथा वेब टेक्नोलॉजी द्वारा करते हैं। आज प्रत्येक विद्यार्थी मोबाइल का उपयोग कर अपनी शिक्षा सम्बंधी समस्याओं का निराकरण कर रहा है।

दूरवर्ती शिक्षा

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आज दूरवर्ती शिक्षा प्रणाली का योगदान बढ़ता ही जा रहा है। दूरवर्ती शिक्षा प्रणाली में मल्टीमीडिया एवं इंटरनेट का योगदान अत्यधिक है। बहुत से व्यक्ति पारिवारिक, सामाजिक , आर्थिक और समय न होने के कारण, उच्च शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते हैं लेकिन उनके मन में पढने की आकांक्षा बनी रहती है। इस प्रणाली के जरिए इच्छुक विद्यार्थी को उनके घरों पर ही शिक्षा मुहैया कराई जाती है। इस कार्य में मल्टीमीडिया, ई-मेल, इंटरनेट ,एस.एम.एस. एम.एम.एस., वीडियो पत्रिकाएं, टेलीविजन पत्रिकाएं आदि की मदद ली जाती है। इसमें शैक्षिक गतिविधियों जैसे-प्रवेश पाठ्य-सामग्री घर बैठे विद्यार्थियों को इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं इंटरनेट के माध्यम से उपलब्ध कराई जाती है।

ई-लाइबेरी

आधुनिक समय में उच्च शिक्षा का स्तर तेजी से बदल रहा है। आज इंटरनेट ने विद्यार्थी को कभी-भीकहीं भी सूचना एवं शिक्षा को आसान बना दिया है। विद्यार्थी एक क्लिक पर अपने विषय से सम्बन्धित हजारों जानकारी तक पहुँच सकता है। घर बेठे-बेठे कोई सी भी पुस्तक पढ़ सकते है इंटरनेट ने दुनिया की किसी-भी जानकारी तक पहुँच आसान की है। इसमें दुनियाँ की किताबों शोध-पत्रों ऑनलाइन लाइब्रेरी शोध-ग्रन्थों का अध्ययन विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार कर सकते है।

ई- बुक्स

आज जीवन के सभी क्षेत्रों में इंटरनेट ने अपनी पहुँच को आसान किया है। जिससे कि आज इंटरनेट पर किताबों की उपलब्धता में तेजी से बढ़ोत्तरी हुई है। जिससे इंटरनेट पर किताबें तथा पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित करना या उपलब्ध कराना ई-प्रकाशन कहलाता है और इस तरह की पुस्तकें ई-बुक्स कहलाती हैं। जिसकों विद्यार्थी मुफ्त में या शुल्क अदा कर पढ़ सकता है। जिसकों आवश्यकतानुसार डाउनलोड भी किया जा सकता है। दिनों-दिन ई-बुक्स की अधिकता से यह सिद्ध होता है कि विधार्थियों की रुचि इस ओर बढ़ती जा रही है।

शोध-प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र में आंकड़ो के संकलन के लिए सर्वे पद्धति का उपयोग किया गया है। 100 बी.एड. विद्यार्थियों (उत्तरदाताओं) से जानकारी प्राप्त की गयी है। ये विद्यार्थी देवास शहर के मायादेवी शिक्षा महाविद्यालय एवं न्यू ऐरा शिक्षा महाविद्यालय में प्रशिक्षण ग्रहण कर रहे हैं।

आकड़ों का सारणीयन तथा आरेखीय प्रस्तुतिकरण एवं विवेचना

1- आप पाठ्य-पुस्तकों तथा इंटरनेट में से शैक्षिक कार्यों के लिए किसका उपयोग ज्यादा करते हैं

1 पाठ्य-पुस्तकें 49

2 इंटरनेट 51

प्रश्न संख्या 1 में उत्तरदाताओं से यह भी प्रश्न पूछा गया कि आप पाठ्य-पुस्तकों तथा इंटरनेट में से शैक्षिक कार्यों के लिए किसका उपयोग ज्यादा करते है। तो 49 उत्तरदाताओं ने कहाँ कि पाठ्य-पुस्तकों का उपयोग करते हैं व 51 उत्तरदाताओं ने कहाँ कि इंटरनेट का उपयोग करते हैं।

2- शैक्षिक कार्यों के लिए आप इंटरनेट का उपयोग क्यों करते हैं

1 सस्ता-माध्यम 26
2 पाठ्य-सामग्री की अधिक उपलब्धता 31
3 मुफ्त में किताबों की उपलब्धता 23
4 आसानी से किताबें उपलब्ध न होना 20

प्रश्न संख्या 2 में यह पूछा गया कि आप शैक्षिक कार्यों के लिए आप इंटरनेट का उपयोग क्यों करते हैंतो 26:ने कहाँ कि सस्ता-माध्यम 31: ने कहाँ कि पाठ्य-सामग्री की अधिक उपलब्धता 23: ने कहाँ कि मुफ्त में किताबों की उपलब्धताए 20: ने कहाँ कि आसानी से किताबें उपलब्ध न होना।

3- क्या इंटरनेट ने उच्च शिक्षा को आसान बनाया है

1 हाँ 100
2 नहीं 0

प्रश्न संख्या 3 में उत्तरदाताओं से यह पूछा गया कि क्या इंटरनेट ने उच्च शिक्षा को आसान बनाया हैतो 100 सभी उत्तरदाताओं ने हाँ में उत्तर दिया व 0 ने नहीं में उत्तर दिया।

4- क्या उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इंटरनेट उपयोगी है

1 हाँ 100
2 नहीं0

प्रश्न संख्या 4 में उत्तरदाताओं से यह प्रश्न पूछा गया कि क्या उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इंटरनेट उपयोगी हैतो 100 सभी ने हाँ में उत्तर दिया व 0 ने नही में उत्तर दिया।

5- आप शैक्षिक कार्यों के लिए निम्न में से किसका उपयोग ज्यादा करते है

1- इंटरनेट 75
2 पाठ्य-पुस्तकें 25

प्रश्न संख्या 5 सें स्पष्ट है कि जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न किया गया कि क्या आप शैक्षिक कार्यो के लिए निम्न में से किस माध्यम का उपयोग करते है। तो 75 उत्तरदाताओं ने कहाँ कि इंटरनेट का उपयोग करते है 25 उत्तरदाताओं ने कहाँ कि हम पाठ्य-पुस्तकों का उपयोग करते हैं

6- क्या आप शिक्षा के क्षेत्र में इंटरनेट के उपयोग से संतुष्ट है

1 हाँ 95
2 नहीं5

प्रश्न संख्या 6- जब उत्तरदाताओं से यह प्रश्न पूछा गया कि क्या आप शिक्षा के क्षेत्र में इंटरनेट के उपयोग से संतुष्ट हैतो 95: ने हाँ में उत्तर दिए व 5: ने नहीं में उत्तर दिया।

7- आप इंटरनेट के उपयोग में किस भाषा को सरल मानते है-

1 हिंदी 15
2 अंग्रेजी 80
3 दोनों 10

प्रश्न संख्यं 7 में उत्तरदाताओं से पूछा गया कि आप इंटरनेट के उपयोग में किस भाषा को सरल मानते हैतो 15 ने हिंन्दी 80 ने कहाँ कि अंग्रेजी व 10 ने दोनों भाषाओं को इंटरनेट के उपयोग में सरल मानते है।

8-क्या इंटरनेट उच्च शिक्षा में अध्ययन हेतु विश्वसनीय माध्यम है

1 हाँ 88
2 नहीं12

प्रश्न संख्या 8 में जब उत्तरदाताओं से पूछा गया कि क्या इंटरनेट उच्च शिक्षा में अध्ययन हेतु विश्वसनीय माध्यम हैतो 88 ने कहाँ कि हाँ व 12 ने नहीं में उत्तर दिया।

9- क्या आपको इंटरनेट के उपयोग में भाषाई समस्या आती है-

1 हाँ 37
2 नहीं63

प्रश्न संख्या 9 में जब उत्तरदाताओं से यह पूछा गया कि क्या आपको इंटरनेट के उपयोग में भाषाई समस्या आती हैतो 37 ने हाँ में व 63 ने नहीं में उत्तर दिया।

10- क्या आपको इंटरनेट के उपयोग में समस्या आती है-

1 नही 95
2 हॉ 5

प्रश्न संख्या 10 में जब उत्तरदाताओं से यह पूछा गया कि क्या आपको इंटरनेट के उपयोग में समस्या आती है तो 5 ने हाँ में व 95 ने नहीं में उत्तर दिया।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध-पत्र के लिए किए गए सर्वे के परिणाम बहुत ही रोचक हैं। शोध-सर्वे के अनुसार 96 उत्तरदाता शैक्षिक कार्यों के लिए इंटरनेट का उपयोग करते हैं। पाठ्य-पुस्तकों का उपयोग इंटरनेट की तुलना में अधिक है। उच्च शिक्षा में इन्टरनेट उपयोग के कारण सामने आये हैं। इनमें प्रमुख है- समय का अभाव, नोकरी के साथ-साथ शिक्षा, जिम्मेदारी अधिक होने के कारण, इंटरनेट पर पाठ्य-सामग्री की अधिक उपलब्धता बाजार तथा पुस्तकालयों में किताबें आसानी से

उपलब्ध ना होना किताबों के महंगी होनी की वजह से विधार्थी इन्टरनेट का उपयोग कर रहें है क्योंकि किताबों की तुलना में इन्टरनेट एक सस्ता माध्यम है। सभी उत्तरदाता मानते हैं कि इन्टरनेट एक सस्ता माध्यम है। सभी उत्तरदाता मानते है कि इन्टरनेट के उपयोग ने उच्च शिक्षा को आसान बनाया है इसलिए वर्तमान समय में इन्टरनेट उच्च शिक्षा के लिए उपयोगी माध्यम है। सिर्फ 4 उत्तरदाता इन्टरनेट के उपयोग से सन्तुष्ट नहीं हैं तथा 88 उत्तरदाता इन्टरनेट को उच्च शिक्षा में उपयोग के लिए विश्वसनीय माध्यम मानते हैं। 80 उत्तरदाता इन्टरनेट के उपयोग में अंग्रजी भाषा को सरल मानते हैं, क्योंकि इंटरनेट पर अधिकतम पाठ्य-सामग्री अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध हैलेकिन 20 लोगों को अंग्रेजी भाषा की वजह से इन्टरनेट में समस्या का सामना करना पड़ता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] एस के मंगल एवं उमा मंगल शिक्षा तकनीकी, पी.एच.एल. लर्निंग, 2009

[2] जे.सी. अग्रवाल, एवं एस.एस.गुप्ता, शैक्षिक तकनीकी, शिपरा पब्लिकेशन, 2011

[3] आशा गुप्ता उच्च शिक्षा के बदलते आयाम हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय 2011

[4] अरविन्द कुमार शर्मा शोध प्रविधियाँ एवं सूचना प्रौद्योगिकीई.एस.एस. पब्लिकेशन 2008

[5] गोस्वामी पूजा एवं सिंह सुषमा (2022)" कोरोना वायरस महामारी का शिक्षा पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव"इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिऐटिव रिसर्च थॉट्स, छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, वॉल्यूम 10, आईएसएसएन नं.2320-2882 पृष्ठ संख्या 500-504

[6] श्रीवास्तव शिवम और वर्मा अनिता (2022)" कोविड-19 में सूचना एवं संचार तकनीकी का शैक्षिक योगदान का अध्ययन "स्कॉलरली रिसर्च जर्नल फॉर इंटरडिसीप्लिनरी स्टडीज, शिक्षा शास्त्र विभाग, किसान पी.जी. कॉलेज वॉल्यूम 9-68, आईएसएसएन नं.2278-8808 पृष्ठ संख्या 16139-16145

[7] श्री वास्तव डी.एन. वर्मा प्रीति (2014) मनोविज्ञान, शिक्षा और अन्य सामाजिक विज्ञानों में सांख्यिकी श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा

[8] यादव, सतीश कुमार (2009) अध्यापक शिक्षा-समस्याएं एवं चुनौतियों भारतीय आधुनिक शिक्षा नई दिल्ली।

[9] ओबेराय, एस.बी. (2008), शैक्षिक तकनीकी, नई दिल्ली प्रकासन आर्य बुक डिपो

[10] 10-भटनागर ए.बी. भटनागर मीनाक्षी (2006) "भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास", आर.लाल बुक डिपो, मेरठ

[11] पाण्डेय, डॉ. बी.बी. एवं पाण्डेय, डॉ. एस.के (2004) भारतीय शिक्षा का इतिहास और सामयिक समस्याएं, गौरखपुर वसुन्धरा प्रकासन